Jansatta/11.8.19/P. 4

देशज भाषाओं को बचाने पर बात

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 10 अगस्त।

साहित्य अकादेमी द्वारा 'अंतरराष्ट्रीय आदिवासी भाषा वर्ष' पर आयोजित दो दिवसीय उत्सव में शनिवार को पहला सत्र 'भारत की आदिवासी भाषाएं संरक्षण एवं पुनरोद्धार' विषय पर केंद्रित था। पहले सत्र की अध्यक्षता के वासमल्ली ने की एवं धर्मेंद्र पारे (कोरकू), जॅय सिंहतोकबी (कोर्बी), सृजन सुब्बा (लिंबू), अमल राभा (राभा) एवं सुबोध हांसदा (संताली) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्ष के वासमल्ली ने तमिलनाडु की तोडा जनजाति और उसकी भाषा के बारे में बताते हुए कहा कि इस भाषा की वर्णमाला में 54 अक्षर हैं और यह भाषा ध्वन्यात्मक है। इसके बोलने वाले मात्र 1500 लोग बचे हैं। इनके गीत मुख्यतया मौसम के वर्णन पर आधारित होते हैं। उन्होंने कहा कि इनका साहित्य आज भी केवल वाचिक रूप में ही उपलब्ध है। इन सभी भाषाओं का उत्थान तभी हो पाएगा जब हम इनके ऑडियो बनाकर संगृहीत करें और नई पीढ़ी में इन देशज भाषाओं के प्रति लगाव उत्पन्न कर सकें। धर्मेंद्र पारे ने कोरकू भाषा के बारे में कहा कि इसको बोलने वाले मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र में हैं और यह मुंडा समुदाय की भाषा के रूप में पहचानी जाती है। कोरकू का मतलब 'मनुष्य' है। जॅय सिंहतोकबी ने कोर्बी भाषा, सृजन सुब्बा ने लिंबू भाषा, अमल राभा ने राभा भाषा और सुबोध हांसदा ने संताली भाषा की वर्तमान स्थितियों और भविष्य की योजनाओं के बारे में विस्तार से चर्चा की। अगला सत्र कविता-पाठ का था जिसकी अध्यक्षता महादेव टोप्पो ने की। कार्यक्रम का अंतिम सत्र कविता-पाठ का था जिसकी अध्यक्षता वसंत निरगुणे ने की। समापन वक्तव्य साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने दिया। साहित्य अकादेमी के सचिव के श्रीनिवासराव ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया। सत्रों का संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक अनुपम तिवारी ने किया।